

अनिल कुमार

इतिहास विभाग, आर०बी०जी०आर०

कॉलेज, महाराजगंज (सिवान)

मौह युगीन संस्कृतियाँ (Iron Age Cultures)
(शेष भाग)

बाइक्रोम का प्रयोग करने से रंग टिकाऊ रहते हैं।
अलंकृत काले समय खड़ी या आड़ी-तिरछी
लकीरें, चारखाने विन्दुओं की पंक्तियाँ, लहरियाँ,
आई ब्रु, वर्ग तथा स्वास्तिक इत्यादि अंकित किये
जाते थे।

हातिनापुर में खुदाई के पश्चात् दूसरे
मृदभांडों के पाँच कालों के अवशेष मिले हैं। जिनके
आधार पर 1050-450 ई० पूर्व चित्रित दूसरे
मृदभांड का समय माना गया है। अधिकांशतः इनका
निर्माण चाक द्वारा किया गया है तथा कहीं-कहीं पर
कुछ हाथ से बनाये गये हैं।

चित्रित दूसरे मृदभांडों के निर्माताओं
के विषय में इतिहासकारों में पर्याप्त मतभेद मिलता
है। कुछ विद्वान इसे विदेशियों का तो कुछ विद्वान
इसे वैदिक आर्यों की कृति मानते हैं।

उत्तरी कृष्णमार्जित मृदभांड (Northern
Black Polished ware) - इन मृदभांडों का रंग काला
होने के कारण इन्हें कृष्णमार्जित मृदभांड कहा जाता
है। ये मृदभांड उत्तरी गंगाघाटी के क्षेत्र से प्रमुख
रूप से प्राप्त हुये हैं।

इस वर्ग के भांडों का रंग
गहरा चमकदार काला होता है। कहीं-कहीं पर
स्लेटी, भूरे तथा स्याही रंग के भी पाये गये हैं।
महीन मिट्टी से बने ये बर्तन चाक पर
बनाये गये हैं जो कि आकार में पतले और छोटे
हैं तथा इन्हें रगड़कर चमकाया जाता था। इसके
बाद लौह युक्त महीन मिट्टी का लेप किया जाता
था। बन्द अवस्था में इन्हें इस प्रकार पकाया जाता

13

NOVEMBER
TUESDAY

WEEK-46

317-048

NOVEMBER '07

S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S	S
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30

था कि इनमें असाधारण नमक तथा मजबूती आ जाती थी।

ये मांड मुख्यतः दो प्रकार के होते थे।- ① कलोरी के आकार के ② ऊंची कोर के तस्तरी के आकार के।

गंगाघाटी के क्षेत्र में ये पात्र सबसे अधिक प्राप्त हुये हैं। मुख्य रूप से हीतनाथ और कौशांबी से अधिकाधिक मात्रा में इनके अवशेष प्राप्त हुये हैं। तक्षशिला के समीप सबसे प्राचीन बरती 'मीरलीला' जिसका निर्माण दसवीं शताब्दी ई० पूर्व के अन्त में अथवा पाँचवीं शताब्दी के प्रारंभ में हुआ था सर्वप्रथम इस मांड के ढींगों की ओर इतिहासकारों का ध्यान गया था।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि उत्तरी कृष्णमार्जित मृदमांडों को निर्मित करने का कार्य दसवीं शताब्दी ई० पूर्व रहा होगा तथा इनका अन्त ई० पूर्व द्वितीय शताब्दी के आरंभ में हो गया होगा।